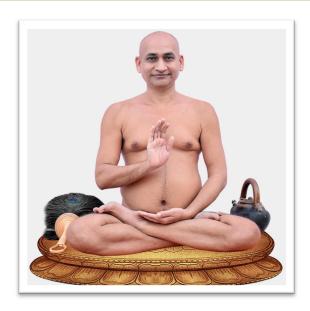
## गुरु विमर्श चालीसा



गुरु चरणों में शीश धर, पाऊं सच्चा ज्ञान।
गुरु विमर्श हैं आप तो, ज्ञानी संत महान्।।
वाणी में अमृत घुला, है शब्दों में ओज।
'शशिकर' दर्शन कर लगा, पायें दर्शन रोज।।

जय विमर्श गुरु गुण के आगर, दर्शन जैसे दिव्य सुधाकर।1। धन्य बने वे जीवनदाता।2। तात सनत व भगवती माता. नगर जतारा हर्षित सारा. मिला उसे पावन ध्रुव तारा।3! भीतर उसकी उत्तरी छाया।४। धर्मशास्त्र में ध्यान लगाया. भ्रम के कारण इत उत डोले. कोई पूछे तो ना बोले।5। प्रश्न किये हैं मन के सारे 161 गुरु विराग के चरण पखारे, जप तप से मिटती है छाया।7। वह जग है कर्मों की माया, कटे नहीं जब तक भव बन्धन, मानव करता रहता क्रन्दन। 81 संत समागम जो भी करता. संभल वह पाँवों को धरता।९। जप-तप-ज्ञान वैराग समाये, कर्म निर्जरा से दुःख जाये।10। तप की ज्योति भीतर जलती, कली ज्ञान की मन में खिलती।11। खुशी मिली सुनकर के वाणी, कर्मों के बस में हर प्राणी 1121 दृढ़ जो इच्छा सदा जगाये, मोह संग ममता बिसराये ।13। वहीं सोच मन भाव जगाया, परिजन को सब हाल बताया । 14। मुक्ति गाउँ गर्ने है गाउँ

वैयावृत्ति से जीवन जागा, गृहस्थ धर्म को गुरु ने त्यागा । 16। रात्रि भोजन को बिसराऊं । 17। आलू प्याज कभी न खाऊँ, ब्रह्मचर्य व्रत को स्वीकारा. हर्षित मन ऐलक पद धारा । 18। जो सोचा वह कर दिखलाया, नगर देवेन्द्र धन्य बनाया । 19। मुनिवर दीक्षा को स्वीकारे।20। नगर बरासौ भिण्ड पधारे. दीक्षा पाकर मोद मनावे ।21। राकेश केश लुंचन करवाये, नाम विमर्श उनने है धारा. जय जयकार करे जग सारा ।22। पाँव चले गुरु पीछे-पीछे, सदा ज्ञान से जीवन सीचे 1231 श्री विमर्श बाल ब्रह्मचारी, संत दिगम्बर पिच्छी धारी 1241 संयम के नव सुमन खिलाये, सच्चे साधक संत कहाये । 25। कलम कलाधर अद्भुत ज्ञानी, बने आप उत्तम व्याख्यानी ।26। अनुभव और शास्त्र से पाया, उसका जग को मर्म बताया ।27। गुरु देशना जो भी सुनता, वह मग के शूलों को चुनता ।28। कुन्थुगिरि पर गुरुवर जावे, देख कुन्थु सागर हरषाये । 29। दो सौ मुनि है पिच्छीधारी, सबकी महिमा अद्भुत न्यारी।30। मुनि विमर्श आचार्य बनाये ।31। सबने मिलकर भाव जताये. पन्द्रह वर्ष मुनि रुप बिताये, मन में नव संकल्प जगावे 1321 गुरु विराग को भाव बताये, चरणों में जा आशिष पायें 1331 नगर बाँसवाडा हरसाया, आचार्यश्री पावन पद पाया । 34। कलम आपकी अविरल चलती, देख उसे मन कलियां खिलती । 35। कविता-गीत-गजल जो आये, वे आशु कवि सम तुरत बनाये । 36। यहाँ जीवन है पानी की बूँद 1371 सच कहा गुरु ने आँखें मूंद, वृथा गर्व मत करे रे प्राणी, जिनवर की वाणी कल्याणी । 381 गुरु विमर्श गुण गरिमायारी । 39। मोहक मूरत सूरत प्यारी, शशिकर जो चालीसा गाये. जीवन अपना धन्य बनाये ।४०।

गुरु विमर्श से संत कम करके देखा ध्यान।
'शशिकर' जिनवाणी सुने, मानव बने महान्।।
जिनके दर्शन मात्र से, मन में होता हर्ष।
वन्दन शत-शत बार है. गुरुवर धन्य विमर्श।